परम्परागत भारतीय चूल्हे से धुएं का निकलना

@*383. **श्री सत्य प्रकाश मालवीय** : क्या ऊर्जा मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) क्या सरकार का ध्यान 7 सितम्बर, 1985 के हिन्दी दैनिक "पंजाब केसरी" में प्रकाशित समाचार की ओर दिलाया गया है जिसमें गैर-पारम्परिक ऊर्जा स्रोत विभाग के सचिव ने स्वीकार किया है कि परम्परागत भारतीय चूल्हे से निकलने वाला धुआं एक दिन में बीस पैकेट सिगरेट के पीने जितना हानिकारक है ; और

(ख) यदि हां, तो धुआं रहित चल्हा उपलब्ध कराने के लिए सरकार द्वारा क्या उपाय किये जा रहे हैं ?

ऊर्जा मंत्री (श्री बसन्त साठे) : (क) और (ख) जी हां । ग्रामीण क्षेत्रों में बायोगैस संयंत्रों के संवर्धन की योजना के अतिरिक्त केन्द्रीय सरकार उन्नत प्रकार के चूल्हों के एक राष्ट्रीय कार्यक्रम को प्रारम्भ कर चुकी है । दिसम्बर, 1983 में इस कार्यक्रम की शुरुआत से देश में अब तक 10 लाख उन्नत प्रकार के चूल्हे स्थापित किए जा चुके हैं । ये चूल्हे धुएं से स्वास्थ्य को होने वाली क्षति का निवारण करते हैं और ईंधन की लकड़ी को भी पर्याप्त मात्रा में बचाते हैं ।

श्री सत्य प्रकाश मालवीय : ये जो चूल्हे स्थापित किये जा चुके हैं उन चूल्हों में एक चूल्हे की क्या कीमत आती है और क्या ये चूल्हे भिन्न-भिन्न प्रकार के हैं या एक ही प्रकार के हैं ।

श्री बसन्त साठे : भिन्न-भिन्न प्रकार के हैं और एक चूल्हे पर करीबन 15–20 रुपये से लेकर 80–90 रुपये तक खर्च आता है ।

श्री सत्य प्रकाश मालवीय : ये जो 10 लाख चल्हे स्थापित किये जा चुके हैं क्या मंत्री महोदय कुछ ऐसा विवरण दे सकेंगे कि प्रत्येक राज्य में कितने चूल्हे स्थापित किये गये हैं राज्यवार ?

श्री बसन्त साठे : कोशिश करता हूं ।

उपसभापति : चूल्हों की कोशिश कर रहे हैं या जवाब देने की ?

श्री बसन्त साठे : जवाब देने की । आन्ध्र प्रदेश में 4,576, बिहार में 611, गुजरात में 4,109, हरियाणा में, 1,463, कर्नाटक में दो हजार...यह सारा विरण भेज दूंगा । यह काफी लम्बा है ।

श्री वीरेन्द्र वर्मा : मंत्री महोदय को जानकारी है कि हिन्दुस्तान के प्राय: सभी देहातों में धुआं वाले चुल्हों से महिलाएं खाना पकाती हैं । इससे उनकी आंखों पर, स्वास्थ्य पर और उनके मकान पर बुरा प्रभाव पड़ता है । मंत्री महोदय ने जो बताया है चूल्हे के आविष्कार के बारे में और जिसमें लागत भी कम लगती है और धुआं भी कम निकलता है उसकी ट्रेनिंग के लिए उन्होंने शहरों में व्यवस्था की है तो क्या महिलाओं के लिए ट्रेनिंग लेने के लिए गांव से शहर में आना संभव हो सकता है ? और उसमें कुछ अनुदान भी देते हैं तो क्या मंत्री महोदय ने जिस सुधारयुक्त चूल की बात की है उसका व्यापक प्रसार देहातों में करने के लिए आदमियों को ट्रेनिंग शहर में देंगे या ब्लाक स्तर पर देंगे ? क्योंकि गांव में जो महिलाएं हैं वे घर नहीं छोड़ सकतीं । उनका पति बाहर खेतों में काम करने चला जाता है, मजदूरी करने चला जाता है । उनको घर में रह कर बच्चों का पालन-पोषण करना पड़ता है । मैं यह जानना चाहता हूं कि क्या यह मुमकिन है, यह उचित है कि ये आदमी जो शहर में ट्रेनिंग लेंगे वे गांव में जा कर महिलाओं को इसी प्रकार की ट्रेनिंग दें । इससे उनका अनुदान भी बचेगा । क्या वह इस पर विचार करेंगे ?

@पूर्वत: तारांकित प्रश्न 243, 5 दिसम्बर, 1985 से स्थानान्तरित ।

श्री वसन्त साठ : जरूर करेंगे ऐसी व्यवस्था गांव में ही खासकर महिलाओं को ट्रेनिंग दी जाए यह व्यवस्था की जा रही है । ज्यादातर यह गाव में ही ट्रेनिंग दी जाती है और आपके जो सुझाव हैं उसपर भी आगे कार्रवाई करेंगे ।

श्री बोरेन्द्र वर्मा : गांवों में नहीं शहरों में ट्रेनिंग दी जा रही है ।

श्री वसन्त साठे : शहरों में ट्रेनिंग देने वालों को ही ट्रेनिंग दी जा रही है ।

PROF. B. RAMACHANDRA RAO: Madam Deputy Chairman, this is an excellent programme initiated during the Sixth Plan and I am very happy that more than 10 lakh "chulhas" were installed over a period of one to two years. While commending this programme, I would like to know what was the investment on these 10 lakh "chulhas"—the cost plus the training programme, both together—and what will be the investment during the Seventh Plan, keeping in mind that this programme is contributing towards the conservation of forests. I was told that only one-third of the fuel is necessary, and I have myself seen that only one-third of the fuel is necessary. To that extent, the forests are saved from felling and so on. In view of the importance of this factor, that this is useful for afforestation programmes, what is the outlay that is going to be provided, or that has already been provided, now that the Plan document is already there? Is there any possibility of increasing the outlay, since the targets are always exceeded? That means, the demand is more but we are not able to provide for it.

SHRI VASANT SATHE: As far as the budgetary provision for the improved chulhas is concerned, the average price of a chulha is taken as Rs. 50 a sum of Rs. 5 is paid by the Central Government to each trained worker for installing an improved chulha in the actual household. The training programme also contains a component of installation of improved chulhas in an actual household. The average cost of a training programme consisting of 20 trainees has been fixed at Rs. 10,000 and is paid entirly by the Central Government. The investment so far in 1984-85 is Rs. 5 crores. In the Seventh Plan the proposed investment is Rs. 40 crores. We had asked for Rs. 85 crores but, as you know the overall resource constraint, they have given us Rs. 40 croes. The figure regarding installation of chulhas that I had given in reply to the question earlier was for this year, 1983 and 1984. I shall send the figures for all the States. I entirely agree that there is a substantial saving of wood which ultimately affects our forests. Also, from health point of view it is very useful. So, along with this when you consider the biogas produced from biomass, what is known commonly as the gobar gas plants, etc., all this integrated scheme will bring about a substantial fuel saving.

SHRI VITHALRAO MADHAVRAO JADHAV: This improved chulha is really a very important aspect so far as energy is concerned and for protecting our forestry. In this regard I would like to ask the honourable Minister whether the Government is seriously thinking of introducing this scheme either in NREP or NRDP so that it does not remain a scheme on paper. It should be a movement to protect our forestry because the entire ecological balance of the country is being disturbed due to the fast deforestation. Is the Government seriously thinking on this aspect?

SHRI VASANT SATHE: We are taking an integrated approach. All rural development agencies like the NREP, the NRDP, etc. together must take up all these programmes of benefit and service to the rural population. This is our approach and we would very much like that this should become a movement for the welfare and improvement of the living conditions of our people in the rural areas.

श्री पशुपति नाथ सुकुल: उपसभापति महोदया, जैसा माननीय मंत्री जी ने बताया कि एक साल में किसी राज्य में एक हजार चूल्हे दिए, किसी में दो हजार। महोदया, चार साल में चार हजार चूल्हे लगाए गए हैं तो इस रफ्तार से

देश की आवश्यकता पूरी करने में एक सदी लग जाएगी । मैं मंत्री जी से जानना चाहता हूं कि हमारे यहां 7 लाख गांव हैं और हम हर गांव में एक चूल्हा दें तो भी 7 लाख चूल्हें बनने चाहिए । तो मंत्री जी कब तक पर्याप्त मात्रा में चूल्हों का निर्माण सुनिश्चित करायेंगे और कब तक वे समझते हैं कि हमारे देश की आवश्यकता को पूरी कर पाएंगे ?

श्री वसन्त साठे : जितना गुड़ डालेंगे उतना ही मीठा होगा ।

श्री वीरेन्द्र वर्मा : 10 लाख चूल्हे तो लगवा दिए ।... **(व्यवधान)**

श्री पशुपति नाथ सुकुल : आप ज्यादा गुड़ डालिए, मना कौन कर रहा है ?

श्री वसन्त साठे : पार्लियामेंट देश की मालिक है । आप ज्यादा प्रावधान कीजिए तो ज्यादा चूल्हे लगवा देंगे । हमने 85 करोड़ मांगा, हमें 40 ही मिला ।...

श्री विश्वनाथ प्रताप सिंह : क्या ये चाहते हैं कि सारा पैसा चूल्हे में डालने की योजना बनाएं ।

श्री वसंत साठे : चूल्हे में डालेंगे लकड़ी भी तो बचेगी ।

श्रीमती मंमूना सुल्तान : उपसभापति महोदया, मैं आपकी शुक्रिया अदा करती हूं कि आपने मुझे सवाल पूछने का मौका दिया । यह वाकई बहुत अच्छी स्कीम है । आज के हिन्दुस्तान में एक बीमार शहर है भोपाल जिसको इसकी बहुत ज्यादा जरूरत है । काफी चूल्हे वहां सप्लाई किये जाने चाहिये... **(व्यवधान)** भोपाल के हादसे में औरतों के फेफड़ों और आंखों पर बहुत असर पड़ा है इसलिए मैं मंत्री जी से यह जानना चाहूंगी कि कितने ऐसे चूल्हे हैं जो भोपाल में इमरजेंसी के तौर पर दिये गये हैं ? इस हादसे को एक साल हो गया है मेरे ख्याल से यह उनके लिए एक जरूरी चीज है इसलिए मैं यह जानना चाहती हूं कि कितने चूल्हे वहां पहुंचा पाए हैं ?

श्री वसन्त साठे : यह सुझाव जो आपने दिया है **(व्यवधान)** यह अच्छा सुझाव है और भोपाल शहर के लिए खास कर के **(व्यवधान)** मैं यह कहता हूं कि यह चूल्हे देने से जिनके आंख में तकलीफ हुई हो उनको इससे बहुत लाभ मिलेगा । हम आपके सुझाव पर विचार करके प्रयास करेंगे... **(व्यवधान)**

श्रीमती मंमूना सुल्तान : मेरा सुझाव नहीं है बल्कि मेरा सवाल यह है कि आपने अब तक भोपाल में ऐसे चूल्हे भेजे हैं या नही भेजे हैं, अगर नहीं भेजे है तो क्यों नहीं भेजे हैं ?

श्री वसन्त साठे : बता देते हैं, इनफारमेशन आ गई है ।

Portable improved Chulhas are being supplied in Bhopal though Government depots. UP till now, 5000 Chulhas have been supplied.

SOME HON. MEMBERS: Very good.

श्री एन० के० पी० साल्वे : उपसभापति महोदया, वे वैज्ञानिक बधाई के पात्र हैं जिन्होंने एक ऐसे चूल्हे का ईजाद किया है जिसमें ईंधन भी कम लगता है और धुआं भी नहीं होता है मगर यह 10 दिन की ट्रेनिंग जो होती है यह मेरी समझ में नहीं आती है । ऐसा कैसा चूल्हा है मैं मंत्री जी से जानना चाहता हूं जिस चूल्हे के मामले में क्या उन्होंने खुद कोई ट्रेनिंग ली है, अगर उन्होंने खुद ट्रेनिंग ली है तो क्या वे हमें भी इसकी ट्रेनिंग देंगे ताकि हम लोग जाएं तो कुछ ट्रेनिंग दे सकें ।

श्री वसन्त साठे : ऐसा है हमारे मित्र महोदय इस चूल्हे में काफी दिलचस्पी ले रहे है । किन-किन चूल्हों मे दिलचस्पी लेते हैं मुझे मालूम नहीं है । उन चूल्हों के बारे में वे खुद जानते हैं जहां तक इस चूल्हे का सवाल है मुझे बताया गया

है कि इसके लिए 10 दिन की ट्रेनिंग होती है उसे किस तरह से बनाना है किस तरह से लगाना है क्या करना है। यह लोग दूसरों को ट्रेनिंग देंगे इसके लिए तो इनको थोड़ी ज्यादा ट्रेनिंग चाहिये लेकिन यह सब के लिए लागू नहीं है । शायद हमारे मित्र यदि इसकी ट्रेनिंग लेना चाहें तो एक दिन में ही उनका पूरा चूल्हे का ज्ञान हो जाएगा।

THE DEPUTY CHAIRMAN: Yes, Mr. Deshmukh.

SHRI SHANKARRAO NARAYANRAO DESHMUKH: Madam, considering the vast backwardness in the country, have any efforts been made to introduce this scheme in the backward areas and the Scheduled Tribe areas and, if any efforts have been made, what is the extent to which efforts have been made?

SHRI VASANT SATHE: Actually, Madam, the main thrust is on the backwardness and we are giving special subsidy as far as the Scheduled Tribe areas are concerned. The element of subsidy for protable chulhas for all the areas in the country, is 50 per cent. But, as far as the Scheduled Caste and Scheduled Tribes and hilly areas are concerned, it is 75 per cent and we are making a special effort and as far as the remote areas like Sikkim are concerned and as far as the hill areas, desert areas, etc. are concerned. So, this programme has a definite emphasis on the weaker sections and the tribal areas.

THE DEPUTY CHAIRMAN: Next Question. Question No. 384.

*384. [*The questioners (Dr. Shyam Sunder Mohapatra and Shri V. Gopalsamy) were absent for answer,* vide *col.* 29-30 infra.]

*385. [*The questioner (Shri M. Basavaraju) was absent. For answer, vide col.* 30 infra.]

THE DEPUTY CHAIRMAN : Question N. 386. Mr. Vikal.

गोबर गैस संयंत्रों की स्थापना

***386. श्री राम चन्द्र विकल : †**
श्री आदिनारायण रेड्डी :

क्या ऊर्जा मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) क्या सरकार का गोबर गैस संयंत्रों को लोकप्रिय बनाने का कोई प्रस्ताव है ;

(ख) यदि हां, तो सातवीं योजना के दौरान इस प्रकार की योजना को लोकप्रिय बनाने के लिये केन्द्रीय सरकार द्वारा उठाये जाने वाले कदमों का ब्यौरा क्या है ; और

(ग) 1984-85 के दौरान गोबर गैस संयंत्र लगाने के निर्धारित लक्ष्यों को कहां तक प्राप्त कर लिया गया है तथा 1985-86 के वर्ष के लिये क्या लक्ष्य रखा गया है ?

ऊर्जा मंत्री (श्री वसन्त साठे) : (क) जी हां ।

(ख) सातवीं योजना की अवधि के दौरान, बायोगैस विकास के लिए एक राष्ट्रीय परियोजना मजबूती से चलायी जा रही है । यह परियोजना तकनीकी सहायता, प्रशिक्षण कार्यक्रम, सेवा सुविधाएं, मरम्मत और रख-रखाव मानीटरन एवं मूल्यांकन, केन्द्रीय आर्थिक सहायता टनकी जाव फी, इत्यादि प्रदान करती है । एक अलग योजना के अंतर्गत, सामुदायिक एवं संस्थागत बायोगैस संयंत्रों का भी कार्यान्वयन किया जा रहा है ।

(ग) वर्ष 1984-85 के लिए 1.50 लाख संयंत्रों के लक्ष्य की तुलना में, 1.80 लाख संयंत्र स्थापित किए गए थे जोकि लक्ष्य से 20 प्रतिशत अधिक

†सभा में यह प्रश्न श्री रामचन्द्र विकल द्वारा पूछा गया ।